आरएनआई नं. . RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं . RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण: - कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस , उदयपुर
प्रेषण दिनांक: -प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2585 • उदयपुर, शनिवार 22 जनवरी, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

वाराणसी (उ. प्रदेश), दिव्यांग जाँच, चयन एवं कृत्रिम अंग माप शिविर

नारायण सेवा संस्थान आप सभी की शुभकामनाओं व सहयोग से विश्वभर में दिव्यांग सहायता व सेवा के लिये जानी जा रही है। देश–विदेश में समय समय पर शिविर लगाकर कृत्रिम अंगों का वितरण दिव्यांग सहायक उपकरण एवं दिव्यांग ऑपरेशन जारी है। ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 9 जनवरी 2022 को समर्पण विहार कॉलोनी फेज 1 पहाड़िया वाराणसी में संपन्न हुआ।

शिविर सहयोगकर्त्ता भारत विकास परिषद वरूणा सेवा संस्थान ट्रस्ट रहा। शिविर में 298 का रजिट्रेशन, दिव्यांगों के लिये कृत्रिम अंग माप 101, कैलीपर माप 12, की सेवा हुई ऑपरेशन हेतु 60 का चयन किया गया।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री इन्दु सिंह जी (अध्यक्ष भारत विकास परिषद), अध्यक्षता श्री रमेश जी लालवानी जी (संस्थापक भारत विकास परिषद वरूणा सेवा संस्थान), विशिष्ट अतिथि श्री मनोज कुमार जी (उपाध्यक्ष), श्री विवेक कुमार जी सूद (सचिव), श्री ब्रहमानंद जी पेशवानी जी (समाजसेवी), श्री डॉ शिप्रा जी धर (समाजसेवी), सीए आलोक जी (सीए)। डॉ. सचिन कुमार के निदेशन में कैलीपर्स माप टीम श्री पंकज जी (पीएनडॉ), श्री नरेश जी वैष्णव (टेक्नीशियन), शिविर टीम श्री अखिलेश जी शर्मा (शिविर प्रभारी), श्री बजरंग जी (सहायक), श्री गोपाल गोस्वामी जी (सहायक), श्री प्रवीण जी (विडियोग्राफर), श्री कपिल जी (सहायक), श्री संदीप भटनागर ने भी सेवायें दी।

कैथल (हरियाणा), दिव्यांग जाँच, चयन एवं कृत्रिम अंग माप शिविर

दिव्यांगजनों को समाज की मूलधारा में लाने तथा उन्हें सकलांग बनाने के लिए नारायण सेवा संस्थान जाँच, उपकरण वितरण, कृत्रिम अंग माप व वितरण तथा ऑपरेशन का काम सतत कर रहा है।

ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 9 जनवरी 2022 को एवं सत्य साक्षी संघ, लोढ़ा अर्पाटमेंट के पास, एस. बी. कॉलोनी कुकटपल्ली हैदराबाद में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्त्ता सत्य साक्षी संघ कुकटपल्ली हैदराबाद रहा। शिविर में 150 का रजिट्रेशन, दिव्यांगों के लिये कृत्रिम अंग माप 24, केलीपर माप 21 की सेवा हुई व 08 का ऑपरेशन हेतु चयन हुआ।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमती जया रमेश जी जागीरदार (समाजसेविका), अध्यक्षता श्री रामया (समाजसेवी), विशिष्ट अतिथि श्री पारस जी जागीरदार जी (समाजसेवी), श्रीमती अल्का जी चौधरी (शाखा संयोजिका), श्री धारीवाल जागीरदार जी (समाजसेवी), डॉ. अजुमुदीन जी के निर्देशन में केलीपर्स माप टीम श्री आर.एन.ठाकुर (पीएनडॉ), श्री नाथूसिंह जी (टेक्नीशियन), शिविर टीम श्री लालसिंह जी (शिविर प्रभारी), श्री मुकेश त्रिपाठी जी श्री बहादुर सिंह (सहायक), श्री अनिल जी (विडियोग्राफर) ने सेवायें दी।

एक कदम अध्यात्म की ओर

संसार में दो प्रकार के पेड़ पौधे होते हैं प्रथम अपना फल स्वयं दे देते हैं, जैसे–आम, अमरुद, केला इत्यादि द्वितीय अपना फल छिपाकर रखते हैं, जैसे–आलू, अदरक, प्याज इत्यादि जो अपना फल अपने आप दे देते हैं, उन वृक्षों को सभी खाद–पानी देकर सुरक्षित रखते हैं, किन्तु जो अपना फल छिपाकर रखते है, वे जड़ सहित खोद लिए जाते हैं जो जीव अपनी विद्या, धन, शक्ति स्वयं ही समाज सेवा में समाज के उत्थान में लगा देते हैं, उनका सभी ध्यान रखते हैं अर्थात् मान–सम्मान देते है। वही दूसरी ओर जो अपनी विद्या, धन, शक्ति स्वार्थवश छिपाकर रखते हैं, किसी की सहायता से मुख मोड़े रखते है, वे जड़ सहित खोद लिए जाते हैं अर्थात् समय रहते ही भुला दिये जाते हैं।

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

ये क्रांति कथा अनोखी महाराज, कान हमने पैदा नहीं किये। कर भी नहीं सकते एक नस नहीं बना सकते। कान ही ज्ञानेन्द्री और कान जब अच्छा श्रवण नहीं करते जिन हरि कथा सुनहि नहीं काना, श्रवण रन्द्र अहि भवन समाना। गोस्वामी जी महाराज ने कहा जैसे साँ की बाम्बी है महाराज! साँप सीधा नहीं जावे, साँप चढ़ जावे। यदि कान का सदुपयोग नहीं करेंगे। एक कान का छेद अपने हृदय में उतरना चाहिए माया। एक कान का छेद हृदय में उतरता है, तो कहते हैं, बड़ा आदमी है, बड़ा अच्छा गुणी है भाई! इनको अपनी व्यथा व कथा भी सुनायेंगे। ये बाहर आउट नहीं करेंगे, ये निन्दा नहीं करेंगे, ये समाज में व्यथा नहीं फेलाऐंगे तो कानो को ऐसा रखना चाहिए। सीधा हृदय में उतरे। किसके कान में उतरते है निन्दा इधर सुना, इधर बोला भड़का दिया।

गुस्से का अन्त पछतावे से ही होता है। लेकिन गुस्सा तो क्रोध का बहुत बड़ा शत्रु है। क्रोध जब आता है, तो बुद्धि अच्छे व बुरे का भेद नहीं करती है। ये कैसे बदलता है, हमारे शरीर के अंगो में आँखो लाल हो गई। नाक में पानी आने लग गया, होंठ फड़कने लग गये। पाँव काँपने लग गये। हाथ की अंगुलिया धूजने लग गई, क्योंकि हमारे शरीर में प्रत्येक क्षण में जो 20 लाख परमाणु पैदा होते है वो परमाणु फिर जलन के हो जाते हैं, क्रोध के परमाणु हो जाते है। ईश्या जाग्रत हो जाती है, विकारों की हो जाती है, हमारी व्याकुलता बढ़ा देते है। इसलिए क्रोध को तो छोड़ ही देना चाहिए।

सेवा - स्मृति के क्षण

अंधेरे से उबरा संदीप

पुत्र के जन्म पर परिवार और सगे–संबंधियों में खुशी की लहर थी। लेकिन यह खुशी तब दुःख में तब्दील हो गई, जब पता चला कि बच्चा जन्म से ही पोलियो का शिकार है। इसके दोनों पांव कमजोर, टेढ़े और घुटनों के पास सटे हुए थे। आस–पास के अस्पतालों में भी दिखाया और उपचार भी हुआ लेकिन कोई लाभ न मिला। किसी बड़े अस्पताल में जाना गरीबी के कारण संभव भी नहीं था। यह त्रासदायी दास्तान है बिहार के पश्चिमी चमपारण जिले के गांव मगरोहा में रहने वाले पिता सुनील कुमार की। बालक संदीप जन्मजात दिव्यांगता के दुःख को लेकर उम्र के सोपान चढ़ता हुआ चौदह बरस का हो गया। माता–पिता ने गोदी में उठाकर उसे दूसरी कक्षा तक पढ़ाई कराई लेकिन बच्चे के आगे का भविष्य गरीबी और दिव्यांगता के कारण उन्हें अंधेरे में ही दिखाई देता था।

माता–पिता दिहाड़ी मजदूर हैं और बच्चे–बच्चियों सहित पांच सदस्यों के परिवार का पोषण करते है। एक दिन उन्हें किसी रिश्तेदार ने सलाह दी की वे बच्चे को राजस्थान के उदयपुर शहर स्थित नारायण सेवा संस्थान में लेकर जाए, जहां इस तरह की बीमारी के निःशुल्क ऑपरेशन होते हैं। उसने इन्हें ये भी बताया कि वह खुद भी इस बीमारी का शिकार था। वहां जाने के बाद अब चलता हूं और अपने दैनन्दिन काम भी बिना सहारे आसानी से कर लेता हूं। सुनील बताते हैं कि वे बच्चे को लेकर 2018 में संस्थान में आए जहां डॉ. अंकित चौहान ने उनकी जांच कर बच्चे के पांव का पहला ऑपरेशन किया। इसके बाद 15 सितम्बर 2021 के बीच कुल 4 ऑपरेशन हुए। संदीप अब पहले से ज्यादा खुश रहता है और चलता भी है। माता–पिता अपने सिर का बोझ हल्का करने के लिए संस्थान का बारम्बार आभार जताते हैं।

सम्पादकीय

आलोचना व्यक्ति के जीवन में स्वच्छता का आविर्भाव करती है। आलोचना वह कैंची है जो आवश्यक काट–छाँट करती है। यह ठीक ही है कि अनियंत्रित या अवांछित का शमन तथा निस्तारण उचित समय पर होना ही चाहिये। किन्तु यहाँ यह भी सोचना उचित होगा कि आलोचना को समालोचना बनाना ही हितकर है। अन्यथा तो वह निन्दा में परिवर्तित होकर कमियां ढूंढ़ने का उपक्रम ही होगा। समालोचना का अर्थ ही है कि किसी के भी सशक्त व कमजोर पक्ष की पहचान करके उचित सुधार की गुंजाईश पैदा करना।

आज व्यक्ति इतना असहिष्णु होता जा रहा है कि अपनी आलोचना या समालोचना सुनना पसंद ही नहीं करता है। हम अपनी आलोचना नहीं जानेंगे तो अपनी कमियों को दूर करने का सहज अवसर खो देंगे। यह सही है कि व्यक्ति को स्वयं की कमजोरियां नहीं दिखाई देती हैं, इसीलिये प्राचीन संतों ने भी निन्दा को नवनिर्माण का हेतु माना है। कबीर ने तो कहा भी है –

'निंदक नियरे राखिये,
आंगन कुटी छवाय।'

अतः हम आलोचना से घबरायें नहीं, सीखें।

कुछ काव्यमय

अपनी कमी कभी भी
अपने को नजर नहीं आती है।
जो नजर ही नहीं आयेगी
वह सुधर नहीं पाती है।
इसलिये आलोचना अपनाना है।
स्वयं को शुद्ध बनाना है।

- बसीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

रही अधूरी नेवले की अभिलाषा

जिसके हृदय में दया नहीं, वह दानी हो ही नहीं सकता। दया का स्फुरण सद्गुण आत्मा में ही होता है। दान भी वही सार्थक है, जिसमें प्रत्युपकार की भावना न हो। यह सच है कि परोपकार और दान के लिए तभी प्रेरित हुआ जा सकता है, जब हम प्राणिमात्र के प्रति आत्मवत हों। दूसरे की पीड़ा जब हम स्वयं में महसूस करेंगे तभी हमारे हाथ स्वतः दूसरों की सहायता के लिए बढ़ जाएंगे। सहृदयी व्यक्ति ही पर पीड़ा से व्यथित हो सकता है। पुण्य अर्जित करने के लिए दान का बड़ा महत्त्व है। दान में त्याग की भावना होनी चाहिए। इसके बिना किया गया दान सार्थक नहीं हो सकता।

महाभारत के युद्ध के बाद महाराज युधिष्ठिर ने अश्व मे यज्ञ किया। पूर्णाहूति के बाद यज्ञभूमि में एक नेवला पहुँचा जिसके शरीर का कुछ हिस्सा स्वर्णिम था। नेवला यज्ञ भूमि में लोटने लगा। उसे देख सभी आश्चर्यचकित थे। धर्मराज युधिष्ठिर ने उससे ऐसा करने का कारण पूछा। नेवले ने कहा – राजन आपके महायज्ञ का पुण्य फल कुरूक्षेत्र के एक ब्राह्मण के द्वारा प्रदत्त सेर भर सत्तू के दान बराबर भी नहीं है। उसने कहा – महाराज ! एक समय कुरूक्षेत्र में भीषण अकाल पड़ा। एक दिन वहाँ के एक ब्राह्मण ने खेतों में बिखरे अनाज के दानों को जैसे–तैसे इकट्ठा कर उसका सत्तू बनाया। भगवान को भोग लगाकर ब्राह्मण ने सत्तू के चार भाग कर पहला पत्नी, दूसरा पुत्रवधू, तीसरा पुत्र को देकर चौथा अपने लिए रखा। वे भोजन करने ही वाले थे कि द्वार पर अतिथि ने दस्तक दी। ब्राह्मण ने प्रेम पूर्वक उसे अपने हिस्से का सत्तू दे दिया। अतिथि के तृप्त न होने पर पत्नी, पुत्र व पुत्रवधू ने भी अपना–अपना भाग प्रेमपूर्वक अतिथि को समर्पित कर दिया।.....

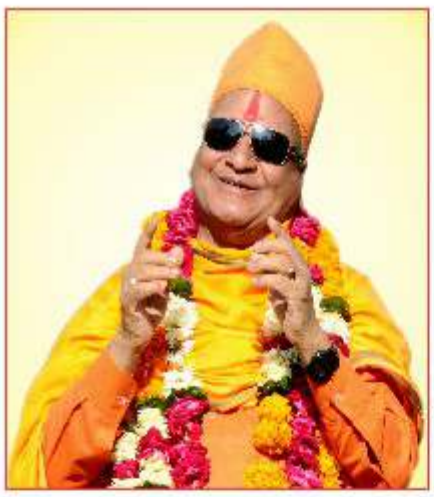

नेवले ने कहा–महाराज भोजन के बाद अतिथि ने जहाँ हस्त प्रक्षालन किया मैं वहाँ पहुँच गया और उस ठण्डक में लोटने लगा। तभी से मेरा आधा शरीर स्वर्णिम हो गया है और शेष शरीर को भी वैसा ही बनाने के लिए यज्ञ भूमियों, तपोवनों आदि में घूम रहा हूँ, किन्तु अब तक सफलता नहीं मिली। वही उद्देश्य मुझे यहाँ भी लाया लेकिन देखता हूँ कि स्तर की दृष्टि से तो यज्ञ विशाल है किन्तु उसमें ब्राह्मण जैसे त्याग की भावना के अभाव से मेरा यहाँ आना भी सार्थक नहीं हुआ।

इस कथा का सार यह है कि फल या परिणाम के विषय में सोचे बगैर किया गया सद्कार्य कभी व्यर्थ नहीं जाता। व्यक्ति ईश्वर की संतान है, उसे दूसरों के दुःख में सहयोगी बनना चाहिए। सहायता में कर्त्तव्य बोध शामिल होना चाहिए न कि अहंकार। मनुष्य का अधिकार केवल कर्म तक सीमित है, फल तक नहीं। व्यक्ति के पास धन और सामर्थ्य तो है किन्तु वह दुःखी पीड़ित व्यक्ति के कल्याण में सहायक नहीं तो उसका मूल्य और अर्थ क्या है। अतएव एक अच्छे और सुखी समाज की रचना के लिए भी यह जरूरी है कि दुःखी, अनाथ, निराश्रित और दिव्यांग भाई–बहिनों की सेवा के लिए मुक्त हस्त से दान दें। प्रभु कृपा से जो धन और सामर्थ्य हमें हासिल है उसका सदुपयोग कर अपने जीवन की सार्थकता को सुनिश्चित करें।

–कैलाश 'मानव'

आप अनमोल हैं

एक आदमी लोहे का काम करता था। एक दिन जब वह अपना काम कर रहा था तो उसके पास बैठे उसके बच्चे ने उससे पूछा –पापा! मनुष्य की कीमत कितनी है? उसके कहा कि बेटा मनुष्य की कीमत तो बहुत है।

बच्चे की जिज्ञासा यहीं शांत नहीं हुई, उसने पुनः प्रश्न किया–पापा! फिर एक आदमी अमीर और दूसरा गरीब क्यों है?

वह समझ गया कि बच्चा जिज्ञासु है, इसे विस्तार से समझाना पड़ेगा। उसने कहा–बेटा अन्दर से लोहे की रॉड लेकर आओ। बेटा भागकर जाता है, और अन्दर से रॉड लेकर आता है।

उसने पूछा–बेटा! यह लोहे की रॉड कितने की होगी? बच्चे ने कहा –200 रुपये की होगी।

पापा–अच्छा, अगर मैं इस रॉड के छोटे–छोटे टुकड़े करके इसकी कीलें बना दूँ तो इसकी कीलों की कीमत कितनी हो जायेगी?

बच्चा मन ही मन गणना करता है, और कहता है – लगभग 1000 रुपये हो जायेगी।

पापा– और अगर इसी लोहे का इस्तेमाल करके घड़ी के छोटे–छोटे स्प्रिंग्स बना दूँ तो कितनी कीमत हो जायेगी?

बच्चा–अगर इसके स्प्रिंग्स बना देंगे तो इसकी कीमत और भी बढ़ जायेगी।

उस पिता ने बच्चे को समझाते हुए कहा –बेटा ! इसी तरह मनुष्य की कीमत भी उसके गुणों से होती है। अगर लोहा ही बने रहोगे तो कीमत कम होगी, अगर अपने अंदर सुधार करके, योग्यता को बढ़ा कर, कील की तरह बनोगे तो कीमत और बढ़ जाएगी और अगर अपनी प्रतिभा का कौशल को और अधिक विकसित करके स्प्रिंग की तरह बनोगे तो और भी अधिक कीमत हो जाओगे। व्यक्ति के अन्दर जितने गुण होंगे, उसकी कीमत भी उतनी ही अधिक होगी। जितने कम गुण होंगे, उसकी कीमत भी उतनी ही कम होगी। अगर आपके अंदर दुर्गुण हैं तो आपकी कीमत कुछ भी नहीं और अगर भीतर सद्गुण हैं तो आप अनमोल हैं।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

रतनलाल को ज्यूं ज्यूं अस्पताल की उपयोगिता का विश्वास हो रहा था त्यूं त्यूं संस्था तथा कैलाश के प्रति उनकी श्रद्धा बढ़ती जा रही थी। अन्त में उन्होंने अपने मन की बात खोल ही दी। कैलाश को उन्होंने कह दिया कि– मैं संस्था से किसी न किसी तरह जुड़ना चाहता हूं। कैलाश ने उनके सामने बड़ी स्थित जमीन पर अस्पताल खोलने का प्रस्ताव रखा। उसने कहा– से. 4 का अस्पताल तो चैनराज लौढ़ा ने बनवाया है, इस अस्पताल की क्षमता पूर्ण हो चुकी है, बड़ी की जमीन खरीदी है कि वहां नया अस्पताल बनाया जाये, यह श्रेय आप ले लो।

इसके पश्चात् रतनलाल डिडवानीया को बड़ी की जमीन बताई। रतनलाल को जमीन पसन्द आ गई, बोले– लड़के से पूछ लेता हूं, वो अगर हां कर देगा तो यहां कार्य शुरू कर देंगे। लड़के ने हां कर दी, बोला –अगर आप को यह कार्य जंचता है तो मेरी भी हां है। अस्पताल की आधारशिला रखने का कार्य रतनलाल के करकमलों से सम्पन्न करवा लिया गया।

आसपास से लेकर दूरदराज तक के क्षेत्रों में शिविरों के आयोजन का कार्य जारी था। इसी क्रम में अमृतसर में भी शिविर किया। अमृतसर के दुर्ज्ञाना मन्दिर के दर्शन कर तथा जलियांवाला बाग में शीश नवा कैलाश भाव विभोर हो गया। इसी यात्रा में शिमला में भी शिविर लगाये। कैलाश के सिद्धान्त "कुँआ जाये प्यासे के पास" के तहत 70 ऐसे स्थानों का चयन किया गया जहां दिव्यांगों के ऑपरेशन की जानकारी बहुत कम थी। इन प्रत्येक स्थानों पर शिविर आयोजित करने को चुनौती स्वरूप लिया और उसे पूरा किया। कन्याकुमारी, आसाम, गोआ आदि के विभिन्न क्षेत्रों में शिविर किये।

2007 में भारत सरकार द्वारा कैलाश को केन्द्रीय समाजिक न्याय की अधिशासी समिति का सदस्य मनोनीत किया गया। समिति केन्द्रीय सामाजिक न्याय मंत्रालय के आधीन थी। उन्हीं दिनों सयुक्त राष्ट्र संघ के निर्देश पर भारतीय संसद में एक विधेयक प्रस्तुत हुआ जिसके तहत विकलांगों को और अधिक सुविधाएं प्रदान करने का प्रावधान था। समिति में इस पर गोआ की बैठक में विस्तृत चर्चा हुई, कैलाश ने सलाह दी कि विधेयक में कुछ अतिरिक्त बातें जोड़ी जानी चाहिये जैसे रेलवे स्टेशनों पर विकलांगों हेतु अलग सुविधाएं हों।

उन्हीं दिनों गुजरात के वीरावल में शिविर का आयोजन किया गया। जग प्रसिद्ध सोमनाथ मन्दिर पास ही था, कैलाश की सोमनाथ के दर्शनों की वर्षो की साध पूरी हुई। इसी दौरान उसकी भेंट एक वृद्धा से हुई, इसका पुत्र जन्म से ही विकलांग था। जन्मजात विकलांगता सर्वत्र है मगर यह धारणा बन चुकी है कि इनका कुछ नहीं हो सकता। वृद्धा ने कैलाश से कहा कि उसके पुत्र का हाथ यदि उसके मुंह तक जाने लगे तो वह अपने आपको धन्य समझेगी। कैलाश ने उसे सांत्वना दी कि वे भरसक प्रयास करेंगे। बच्चे का ऑपरेशन हुआ और वह अपने हाथ से भोजन करने लगा तो उसकी मां की खुशी देखते ही बनती थी। कैलाश जीवन भर उस क्षण को नहीं भूल सकता।

अंग - 215